अज़ान के मायने क्या हैं जानते भी हैं मोदी ?

प्रशांत टंडन

अज़ान प्रार्थना नहीं है बल्कि प्रार्थना के लिए निमंत्रण है। इसका अर्थ होता है पुकारना या घोषणा करना. अज़ान में शामिल दो प्रमुख वाक्य हैं

हय्या लसला : आओ नमाज़ की तरफ़

हय्या ललफलाह - आओ सफलता की तरफ़

कई बार मेरे घर पर कुछ मुस्लिम दोस्त बैठे होते हैं और अज़ान की आवाज़ सुनाई देती है. हम चाय पी रहे होते हैं या बात कर रह होते हैं तो रुक नहीं जाते हैं. अज़ान के एक दो मिनट के बाद जिसे नमाज़ पढ़नी होती है वो दूसरे कमरे में चला जाता है.

नेताओं के बीच फैशन बन गया है अज़ान की आवाज़ लाउड स्पीकर पर सुनते ही भाषण रोक देने का. कल तो हद ही हो गई. मोदी जी भी अज़ान सुन कर खामोश हो गए - भाषण ही रोक दिया. गजब का टोकनिज़्म है.

आप अज़ान का एहतराम करे - अच्छी बात है. मस्जिद के मौलवी की अज़ान जिसे सुननी होगी वो सुन ही लेगा. आप तो ज़किया ज़ाफरी की पुकार सुनें, अखलाक के बच्चों की न्याय के लिए गुहार सुने जिसे आप ही के लोगो ने पीट पीट मार डाला. पहलू खान की पत्नी और भाई भी आपसे कुछ कह रहे हैं उन्हे भी सुने. उन सैकड़ों बेगुनाह इन्सानों की चीखे सुने जो गुजरात के नरसंहार में मारे गए.

अज़ान कानो में पड़े और आप खामोश हो जाये और जब बोलें तो श्मशान-कब्रिस्तान करें, ये तो मक्कारी के सिवा कुछ नहीं है।

- साइबर नज़र

एक अँधा व्यक्ति भीख मांगता हुआ

एक अँधा व्यक्ति भीख मांगता हुआ राजा के द्वार पर पंहुचा। राजा को उस पर दया आ गयी,राजा ने प्रधानमंत्री से कहा-यह भिक्षुक जन्मान्ध नहीं है,यह ठीक हो सकता है,इसे राजवैद्य के पास ले चलो।

(दोनों उसे पकड़कर ले जाते हैं) रास्ते में राजा का मंत्री कहता है महाराज आपसे एकांत में कुछ कहना चाहता हूं। दोनों भिक्षुक को वहीँ बैठाकर दूसरी ओर जाते हैं।

मंत्री कहता है महाराज यह भिक्षुक शरीर से हृष्ट-पुष्ट है,यदि इसकी रौशनी लौट आयी तो इसे आपका सारा भ्र्ष्टाचार दिखेगा,आपकी शानोशौकत और फिजूलखर्ची इसे दिखेगी।आपके राजमहल की विलासिता और आपके रनिवास का अथाह खर्च इसे दिखेगा,इसे यह भी दिखेगा कि जनता भूख और प्यास से तड़प रही है,सूखे से अनाज का उत्पादन हुआ ही नहीं और आपके सैनिक पहले से चौगुना लगन वसूल रहे हैं।

शाही खर्चे में बढ़ोत्तरी के कारण राजकोष रिक्त हो रहा है ,जिसकी भरपाई हम सेना में कटौती करके कर रहे हैं ,इससे हजारों सैनिक और कर्मचारी बेरोजगार हो गए हैं। ठीक होने पर यह भिक्षुक औरों की तरह ही रोजगार की मांग करेगा और आपका ही विरोधी बन जायेगा।

मेरी मानिये तो यह आपसे मात्र दो वक्त का भोजन ही तो मांगता है,इसे आप राजमहल में बैठाकर मुफ्त में सुबह-शाम भोजन कराइये और दिन भर इसे घूमने के लिए छोड़ दीजिये।यह आपका पूरे राज्य में गुणगान करता फिरेगा,कि राजा बहुत न्यायी हैं,बहुत ही दयावान और परोपकारी हैं।इस तरह मुफ्त में खिलाने से आपका संकट कम होगा और आप लंबे समय तक शासन कर सकेंगे।

राजा को यह बात समझ में आ गयी,वह वापस अंधे के पास गया और दोनों उसे उठाकर राजमहल ले आये।अब अँधा राजा का पूरे राज्य में गुणगान करता फिरता है,उसे यह नहीं पता कि राजा ने उसके साथ धूर्तता की है,छल किया है,वह ठीक होकर स्वयं कमा कर अपनी आँखों से संसार का आनंद ले सकता था।

यही हाल वर्तमान में सरकारें करती हैं,हमे मुफ्त का लालच देती हैं किंतु आँखों की रोशनी (अच्छी शिक्षा व रोजगार) नहीं देतीं जिससे कि हम उनका भ्रष्टाचार देख पाएं,उनकी फिजूलखर्जी और गुंडागर्दी देख पाएं,उनका शोषण और अन्याय देख पाएं।

और हम अंधे की तरह उनका गुणगान करते हैं कि राजा मुफ्त में सबको सामान देते हैं।हम यह नहीं सोचते कि यदि हमें अच्छी शिक्षा और रोजगार सरकारें दें तो हमें उनकी खैरात की जरूरत न होगी,हम स्वत: ही सब खरीद सकते हैं।

पर हम सभी अंधे जो ठहरे,केवल मुफ्त की चीजें ही हमे दिखती हैं।

- साइबर नज़र

स्तनपान का ग्लैमर और हम

सोनाली मिश्र

कई दिनों से एक बार फिर से स्तनपान चर्चा में है. एक मैगजीन की फोटो पर एक मॉडल का चित्र है और उस पर लिखा है कि मुझे घूरे नहीं!

हालांकि मैं चाह रही थी कि इस पर न लिखूं, क्योंकि साफ़ साफ़ लिखने से आपको स्त्री विरोधी और न जाने क्या क्या करार कर दिया जाता है. मैं न जाने क्यों इन डिज़ाईनर मुद्दों के खिलाफ ही रहती हूँ. जहां पर मेरा घर है वहां उच्च मध्यवर्गीय से लेकर निम्न मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय लोग मिल जाएंगे. जाहिर है, सबकी ड्रेस उसी के अनुसार होगी. महिलाएं भी हैं, हर समय कंस्ट्रक्शन चलता रहता है, राजगीरी का काम करने में बहुत स्त्रियाँ भी हैं, और उनमें से कई ऐसी भी हैं, जिनकी गोद में बच्चा होता है।

बच्चा एक किनारे झूले पर सोता रहता है और उसके रोने पर वह आराम से उसे दूध पिलाती है. सड़क चलती रहती है, एक तरफ सीमेंट और बजरी मिलती रहती है, ईंटें ऊपर जाती रहती हैं, वह हँसते हुए बातें भी करती है और जैसे ही बच्चा सो जाता है, वह उसे सुलाकर दो मिनट बैठकर फिर से अपना काम करने लगती है. यकीन मानिए, जब वह स्तनपान कराती है उस समय उसे कोई भी नहीं घूरता और कम से कम मेरा तो अनुभव यही है कि स्तनपान कराती हुई महिला को कोई विकृत मानसिकता वाला ही घूर सकेगा. मैं भी दो बच्चों की माँ हूँ, कई बार बाहर जाना हुआ. कई बार ऐसा हुआ जब बच्चा रोया और उस समय लोगों की सदाशयता ने स्तनपान सहज बनाया. समझ नहीं आता, कि इस प्रकार से स्तनपान को ग्लैमराइज़ कर कोई कहना क्या चाहता है?

स्तनपान तो सहज कार्य है, सहज प्रक्रिया है, आप मेट्रो में सफर करिए, लोकल बस में सफ़र करिए, यदि कोई स्त्री स्तनपान करा रही है, तो लोग उससे दूर होकर खड़े हो जाते हैं, उसे इस प्रक्रिया को सहजता से पूरा करने देते हैं. बचपन से ही मैं बसों में सफ़र किया है, फिर चाहे वे रोडवेज की हों या भीड़ से भरी प्राइवेट बसें, सभी बसों में यदि कोई स्थिति दिखी तो मेरी याद में ऐसा नहीं आता कि उस समय विशेष पर स्त्री के अंग विशेष को घूरा गया हो. यदि कोई ऐसा करने का दुस्साहस करता भी था, तो उसकी वह स्थिति होती थी कि वह फिर ऐसी हरकत करने की सोचता भी नहीं.

दरअसल जब जब ऐसे ऐसे डिजाइनर मुद्दे उठते हैं, तब तब स्त्रियों के वास्तविक मुद्दे कहीं पीछे चले जाते हैं. आज भी लड़कियों के साथ तमाम समस्याएँ हैं. मगर जब भी कोई महिला इस तरह से मुद्दे की मॉडलिंग करती हुई आती है, वहां पर लडकियां भी इसी चमक दमक का शिकार हो जाती हैं, और नेपथ्य में चली जाती हैं वे सभी समस्याएं जो वाकई में समस्याएं हैं.

सच कहूं, तो लड़कियों को कभी शायद पता भी नहीं चल पाता कि आखिर उनकी समस्या है क्या? उनका शोषण क्या है और कौन कर रहा है? बाज़ार उन्हें किस तरह इस्तेमाल कर रहा है, किस तरह उन्हें अपने कब्जे में लेकर केवल फेयर एंड लवली का शिकार बना रहा है? आज भी गोरापन लड़कियों का सबसे बड़ा गुण बना हुआ है, आज भी किसी पुरुष को प्रसन्न करना उनका सबसे बड़ा गुण माना जाता है. आज भी आम अवधारणा है कि महत्वाकांक्षी स्त्रियाँ ही घर तोड़ने के लिए जिम्मेदार हैं, और आज छोटे से ही हम लड़कियों के मन में यह बात डाल देते हैं कि छोटे छोटे कपड़े आधुनिकता की निशानी है.

समस्या स्तनपान को बढ़ावा देने से नहीं है, वह एक हंसती हुई मजदूर महिला भी दे सकती है, जो खुले में आराम से बैठकर अपने शिशु को स्तनपान करा देती है, मगर दुखद है कि आज भी हम किसी मजदूर महिला या कृषक महिला को नायिका के रूप में नहीं दिखा पाते, हम सौन्दर्य की नैसर्गिकता को बाजारू बनाने पर तुले हैं, हम स्तनपान जैसी नैसर्गिक प्रक्रिया को बाज़ार के हवाले कर रहे हैं. समस्या बाज़ार के हमारे दिमाग में समाने से है. स्तनपान और मातृत्व एक सहज प्रक्रिया है, उसे सहज ही रहने दें.

मौम एंड मी के डिज़ाईनर उत्पादों से पहले भी हमारे यहाँ शिशु सरसों से भरा हुआ तकिया लगाते थे और खोपड़ी एकदम गोल हो जाती थी.

मुनाफे की भूख किस दरिंदगी तक ले जा सकती है व्यवस्था को ?

अब गर्भवती महिलाओं को काम से निकालने की कानूनी मंजूरी

रवीन्द्र गोयल

यह तो सभी मानते हैं की पूंजीवादी व्यवस्थाओं में मुनाफा ही खुदा है, मुनाफा ही भाई/ रिश्तेदार है वही न्याय है वही इंसानियत है. लेकिन यह मुनाफे का लालच/भूख किस हद जा सकती है इसका ताजा उदहारण है european court of justice द्वारा इस 22 फरवरी को दिया गया एक फैसला। यूरोपियन कोर्ट ने इस फैसले में फरमाया है की एक गर्भवती कर्मचारी की बर्खास्तगी तब तक स्वीकार्य है, जब तक कि उसकी बर्खास्तगी के लिए बताया गया कारण उसकी गर्भावस्था नहीं है, यह फैसला यूरोपियन कोर्ट ने स्पेनिश अदालत की एक याचिका के जवाब में दिया। 2013 में एक स्पैनिश कंपनी ने बड़े पैमाने पर छंटनी के भाग के रूप में गर्भवती महिलाओं को भी बर्खास्त किया था। उसकी कड़ी आलोचना होने पर स्पेनिश अदालत ने यूरोपियन कोर्ट से स्पष्टीकरण के लिए गुहार लगायी। इस स्पष्टीकरण के साथ कि एक गर्भवती कर्मचारी की बर्खास्तगी तब तक स्वीकार्य है, जब तक कि उसकी बर्खास्तगी के लिए बताया गया कारण उसकी गर्भावस्था नहीं है। यूरोपियन कोर्ट ने गर्भवती महिलाओं को काम से निकलने की मालिकों की मुहिम को कानूनी मान्यता

दे दी है. तय है कि अब गर्भवती महिलाओं को काम से निकलने की गति में तेजी आएगी.क्योंकि निकालने के लिए सिर्फ यही तो तर्क देना है कि उसको निकलने का कारण उसका गर्भवती होना नहीं है. हम जानते हैं की इसके इतर कितने तर्क गढ़े जा सकते हैं- उसका काम अच्छा नहीं है, वो धीरे काम कर रही है, उसकी धीमे काम की गति और काम करने वालों पर गलत प्रभाव डाल रही है आदि आदि ।

स्वाभाविक तौर पर इस फतवे का यूरोप में प्रगतिशील तत्व विरोध कर रहे हैं. ग्रीस की कम्युनिस्ट पार्टी (केकेई) ने सही ही कहा है' यह फैसला कोर्ट और यूरोपीय संघ संस्थानों द्वारा एक ऐसा फैसला है जो सामाजिक बर्बरताओं की सभी सीमाओं को लांघ रहा है।'

हिंदुस्तान में भी हमें इस मजदूर विरोधी निर्णय की निंदा करनी चाहिये और विरोध करना चाहिये।

बैंक घोटालों की रासलीला में

बैंक घोटालों की रासलीला में अमित शाह के आशीर्वाद वाले समधियों की रामलीला चल रही है।

6000 करोड़ का घोटाला करने वाले विनसम डायमंड के जतिन मेहता गौतम अडानी के भाई विनोद अडानी के समधी हैं।

11000 करोड़ का घोटाला करने वाले फायरस्टार डायमंड वाले नीरव मोदी के भाई निशाल मोदी की शादी मुकेश और अनिल अंबानी की भांजी इशिता सलगांवकर से हुई है।

3500 करोड़ का घोटाला करने वाले रोटोमैक के विक्रम कोठारी भी गौतम अडानी के भाई विनोद अडानी के समधी है।

अमित शाह के बेटे जय शाह को करोड़ो फाइनेंस करने वाले केआईएफएस फाइनेंशियल सर्विसेज के राजेश खंडवाला रिलायंस समूह के परिमल नाथवानी के समधी हैं।

44000 करोड़ के बैंक कर्ज में डूबे वीडियोकान के मालिक वेणुगोपाल धूत के भतीजे सौरभ की शादी भूषण पावर एंड स्टील के चेयरमैन संजय सिंघल की बेटी राधिका के साथ हुई है। भूषण स्टील पर 56000 करोड़ का कर्ज बैंको का बकाया है।

मुकेश अंबानी की होने वाली बहू श्लोका की मां मोना मेहता से नीरव मोदी का कनेक्शन है। मोना मेहता के भाई यानी श्लोका के मामा मयंक मेहता की शादी नीरव मोदी की बहन पूर्वी से हुई है।